IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण मुद्दों पर मीडिया की भूमिका

डॉ. राजेष चौधरी

सहायक आचार्य,

ऐष्वर्या कॉलेज ऑफ एजूकेषन जोधपुर

षोध सारांक्ष – मनुष्य, पषु–पक्षी एवं पेड़–पौधों के जीवन में पर्यावरण का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह जीवन को आधार प्रदान करता है तथा इसके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते है। पूरे ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जो पर्यावरण होने के कारण जीवन संभव हो सका हे। पर्यावरण का मतबल है ऐसा परिवेश जिसमें जीव रहते हैं तथा पर्यावरण और जीव प्रकृति के दो संगठित और जटिल घटक हैं। पर्यावरण, जीवों के साथ–साथ मनुष्य के जीवन को नियंत्रित करता है। मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में पर्यावरण के साथ अधिक संपर्क में आता है। आधुनिक युग में पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है और इसको जानने के लिए हमें पर्यावरण के विभिन्न मुद्दों को जानना होगा। इस महत्वपूर्ण कार्य में मीडिया एक बहुत ही उपयोगी साधन हो सकता है। मीडिया के तहत उसके अनेक साधन है इस कार्य में हमारी महत्वपूर्ण सहायकता कर सकते है। जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाएं एवं सिनेमा आदि। इस मीडिया के साधनों से हम पर्यावरण के मुद्दों को और अधिक रोचक, सक्रिय, जिज्ञासु तथा अच्छे तरीके से समझ और समझा सकते है। इस षोध का मुख्य उद्देष्य यही है कि हम पर्यावरण के विभिन्न मुद्दों को अच्छी तरह से जान सके और इस कार्य में मीडिया और उसके विभिन्न संसाधन हमारे में किस प्रकार उपयोगी हो सकते है यह जानना है।

मुख्य षब्द – पर्यावरण के विभिन्न मुद्दे, मीडिया का योगदान

प्रस्तावना – पर्यावरण में जीव–जन्तु, वनस्पति, वायु, जल, प्रकाश, ताप, मिट्टी, नदी, पहाड़ आदि सभी अजैविक तथा जैविक घटकों का समावेश होता है। इसमें वे सब कुछ षामिल होते है, जो पृथ्वी पर अदृश्य एवं दृश्य रूप में विद्यमान है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को पारिभाषित करते हुए कहा गया है कि पर्यावरण में एक ओर पानी, वायु तथा भूमि और उनके मध्य गहरा संबंध विद्यमान होता है। वहीं दूसरी ओर मानवीय प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु एवं सम्पत्ति आदि षामिल होते हैं। पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरुकता 321 और 300 ईसा पूर्व के मध्य से देखी जा सकती है। भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में वर्णन किया था। वहीं पर्यावरण के विभिन्न मुद्दों एवं जागरूकता कार्यक्रम में पर्यावरण संतुलन, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, पर्यावरण प्रदूषण के कारण, प्राकृतिक आपदाओं के कारण, पर्यावरण संरक्षण संबंधी कानूनों एवं पर्यावरण षिक्षा के विभिन्न स्तरों पर मीडिया एक बहुत ही उपयोगी साधन हो सकता है। वहीं मीडिया पर्यावरण की सुरक्षा में सकारात्मक भूतिका निभा सकता है। मीडिया लोगों को पर्यावरण की क्षति के परिणामों के बारे में सचेत और जागरूक कर सकता है। वहीं उद्योगों तथा कारपोरेट के द्वारा कानूनों की अपेक्षाओं के उल्लंघन को मीडिया उजागर कर सकता है और नये कानूनों का विष्लेषण कर सकता है।

वहीं अगर हम अब तक पर्यावरण मुद्दों पर मीडिया का योगदान देखे तो हम यह कह सकते है कि अभी तक मीडिया ने पर्यावरण मुद्दों को लेकर कोई विषेष अभियान या चेतना तथा जागरूकता कार्यक्रम नहीं चलाया है। इसी संबंध में भारत के पूर्व न्यायाधीष सेन्टर फॉर मीडिया स्टडीज नई दिल्ली के अध्ययन के परिणाम बताते हुए कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रमुख समचार चैनलों व समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठों पर पर्यावरण पर प्रसारण एवं प्रकाषन नगण्य रहा है। वहीं पत्र पत्रिकाओं में भी अभी पर्यावरणीय पत्रकारिता अपने षैषावस्था में ही है। क्योंकि बहुत सारे सामान्य समाचार पत्र पत्रिकाएं और इलेक्ट्रानिक चैनलों में पर्यावरण संबंधी लेख आते तो रहते है, परन्तु इस संबंध में नियमित रूप से पर्यावरण के मुद्दों को लेकर कोई स्थायी या रोजाना लेख प्रकाषित नहीं होते है। सन् 2007 में इंडिया टुडे के 11वें अंकों का एटरेंडम चयन कर देखा गया तो बहुत ही हेरान करने वाले परिणाम सामने आए। इसमें औसतन 14.71 प्रतिषत राजनीति, 12.66 प्रतिषत अपराध, 11.48 प्रतिषत विज्ञान, 20.71 प्रतिषत कला धर्म साहित्य, 17.88 प्रतिषत विभिन्न विषय, 5.70 प्रतिषत खेल तथा 11.70 प्रतिषत व्यापार वाणिज्य पर कवरेज था। जबकि पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कवरेज मात्र 1.55 प्रतिषत ही था। इसका मतलब यह है कि मीडिया में पर्यावरणीय पत्रकारिता का प्रतिषत 2 प्रतिषत ही नहीं है। वहीं ऐसा नहीं है कि मीडिया पर्यावरण को लेकर सचेत नहीं है। मीडिया ने सयम–समय पर दुनियां को पर्यावरणीय समस्याओं को उठाया है और लोगों का जनमत तैयार करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यावरण को लेकर डिस्कवरी चैनल, एनिमल प्लेनेट, नेषनल जियोग्राफिक तथा विभिन्न चैनल और पत्र पत्रिकाएं हिन्दी भाषा में भी प्रसारण प्रारंभ किया है। ऐसे कार्यक्रमों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है तो एक सुखद अनुभूत देता है। वहीं अनेक इलेक्ट्रोनिक चैनलों में मौसम के साथ प्रदूषण को भी स्थान देकर अच्छा प्रयास कर रहे है। वहीं मीडिया पर्यावरण से संबंधित प्रषासन की योजनाएं, कियान्वयन, कार्यषैली और वास्तविकता से जनता को अवगत करवाता है तथ प्रषासन के सजग प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग में मीडिया की भूमिका

वैज्ञानिकों की माने तो वातावरण में मौजूद ग्रीनहाउस गैसें लौटने वाली अतिरिक्त उष्मा को सोख रही है। इससे धरती की सतह का तापमान लगातार बढ रहा है। ऐसी आशंका जताई जा रही है कि 21वीं सदी के समाप्त होने तक पृथ्वी के औसत तापमान में 1.1 से 6.4 डिग्री सेंटीग्रेड की बढोतरी हो जाएगी। भारत में बंगाल की खाड़ी के आसपास यह वृद्धि 2 डिग्री तक होगी। वहीं हिमालयी क्षेत्रों में पारा 4 डिग्री तक चढ़ेगा। इससे सूखा, अतिवृष्टि, चक्रवात और समुद्री हलचलों को वैज्ञानिक तापमान वृद्धि का नतीजा बताया जा रहा हैं। वहीं वैज्ञानिकों के अनुसार तापमान वृद्धि के कारण समुद्र स्तर में जो वृद्धि होगी वह दुनिया के तटीय इलाकों में कहर बरपा देगी। इसमें एशिया महाद्वीप इसलिए सर्वाधिक प्रभावित होगा कि यहां तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है। एषिया महाद्वीप में चीन, भारत, बांग्लादेश, वियतनाम, इंडोनेशिया और जापान में सर्वाधिक जन–धन की हानि होने की संभावना है। तटीय क्षेत्रों सहित विभिन्न क्षेत्रों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा कराए गए एक अध्ययन के अनुसार समुद्र–स्तर में एक मीटर वृद्धि से भारत के 5764 वर्ग किलोमीटर तटीय क्षेत्र डूबने की संभावना है। जिससे 7.1 मिलियन लोग विस्थापित होंगे। ग्लोबल वार्मिंग के बढते ख़तरे से निपटने के लिए बैंकॉक में 120 देशों की बैठक हुई। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज की रिपोर्ट की बात करें तो अगर दुनिया की कुल आमदनी का तीन प्रतिशत हिस्सा भी ग्लोबल वार्मिंग से निपटने पर खर्च किया जाए तो 2030 तक तापमान वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस तक सीमित किया जा सकता है।

पर्यावरण में परम्परागत माध्यमों की भूमिका

पर्यावरण में परम्परागत माध्यम या लोक माध्यम की जड़ें आदिवासी क्षेत्रों में गहरी फेली हुई हैं। इनके माध्यम से न केवल ग्रामीण जन जीवन की सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्ति होती है बल्कि ये माध्यम पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरणीय चेतना के प्रसार में भी सहायक हो सकते हैं। लोकगीत, लोक संगीत, लोक नृत्य, नौटंकी, कठपुतली आदि लोक माध्यम के साधन हैं। ये माध्यम श्रोताओं से सीधा सम्पर्क बनाते हैं। इसलिए इनके माध्यम से पर्यावरणीय सूचना और संदेश प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित किया जा सकता हैं। इनका उपयोग नगरों की अपेक्षा गांवों में आसानी से किया जा सकता है क्यों कि ये उनकी परम्परागत माध्यम लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम होते हैं। पिछले वर्षों में भारत में कई पर्यावरणीय आंदोलनों का जन्म हुआ है। जिन्हें मीडिया ने इन आंदोलनों को व्यापक स्थान दिया और इनके उद्देश्यों से जनता को अवगत कराया। यह है मख्य आंदोलन – चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, टेहरी बांध विरोधी आंदोलन, मूक घाटी, एप्पिको आंदोलन, भोपाल गैस त्रासदी, विष्णु प्रयाग बांध, चिलिका आंदोलन एवं पानी बचाओ आंदोलन और दिल्ली का वायु प्रदूषण नियंत्रण आदि। वहीं मीडिया को यह ध्यान रखना होगा कि वे अपनी बात समाज के किस वर्ग को किस माध्यम के जरिए पहुंचा रहे हैं। उन्हें जहां पर्यावरण संरक्षण के लिए बनाए गए नियमों की अवहेलना करने वाली घटनाओं को सामने लाना चाहिए तथा जो संस्थाएं पर्यावरण संरक्षण के लिए अच्छा काम कर रही हैं उनके कार्यों को भी उजागर करना चाहिए। यह बात सत्य है कि कानून, उपदेश और दबाव की तुलना में मीडिया पर्यावरण संबंधी जनचेतना जगाने की दृष्टि से काफी कारगर सिध्द हो सकता है।

पर्यावरण में मीडिया की भूमिका

धरती पर अब तक न जाने कितनी ही सभ्यताएं उदित और नष्ट हुई। इसकी जानकारी भी अब तक मनुष्य नहीं ढूंढ पाया है। हम उन सभ्यताओं को ढूंढते–ढूंढते स्वयं भी उसी रास्ते पर चल रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरणीय जागरुकता, पर्यावरण शिक्षा में व्यापक चेतना लाने में मीडिया भी उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। पर्यावरणीय नीतियों के निर्धारण और नियोजन में जनसामान्य की सहभागिता तभी प्रभावी हो सकती है जब उन्हें पर्यावरणीय मुद्दों की पर्याप्त सूचना एवं जानकारी समय–समय पर हो। मीडिया से यह अपेक्षा की जाती रही है कि वे वैश्विक, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली पर्यावरणीय घटनाओं, समाचारों और सूचनाओं को जनसामान्य तक इस ढंग से पहुंचाए कि वे तथ्यों का सही विश्लेषण कर अपनी राय दे सकें। मीडिया का लक्ष्य पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से व्यक्ति को समझ, विवेक, व्यावहारिक–ज्ञान, कौशल प्रदान करना है। व्यक्ति, समाज, देश एवं राष्ट्र में पर्यावरण के प्रति न केवल जागरुकता, चेतना एवं रुचि जागृत करना है बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित भी करना है।

पर्यावरण मुद्दे और प्रिंट मीडिया की भूमिका

प्रिंट मीडिया पर्यावरणीय जनसंचार का एक मजबूत, सशक्त और व्यापक माध्यम है। यह माध्यम लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप सर्वाधिक जीवन्त माध्यम है। पर्यावरण संरक्षण में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन इसके लिए मीडियाकर्मी उद्देश्यपरक दृष्टिकोण अपनाएं। भारत में 22 प्रमुख भाषाओं सहित 10,00 से अधिक भाषाओं और बोलियों में समाचार पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। इस माध्यम के द्वारा पर्यावरणीय सूचना प्रसारण, पर्यावरण संरक्षण हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण, पर्यावरणीय समाचारों, कार्यक्रमों, लेखों, फीचरों, साक्षात्कारों का प्रकाशन जनमत निर्माण करने में सहायक सिद्ध होती हैं। पोस्टरों और चित्रों के माध्यम से पर्यावरण

संरक्षण, हमारा पर्यावरण, पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण के प्रति प्रेम, पेड़ लगाओ, पर्यावरण और प्रदूषण आदि से संबंधित संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली संदेशों को जनसामान्य के मध्य सम्प्रेषित किया जा सकता है।

पर्यावरण मुद्दे और इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका

इलेक्ट्रानिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, मल्टी मीडिया और ऑडियो–वीडियो, स्लाइड, निओन साइन आते हैं। रेडियो के माध्यम से शिक्षा, सूचना और मनोरंजन सम्प्रेषित होता है। भारत में मुम्बई में रेडियो क्लब द्वारा जून, 1923 में प्रथम बार प्रसारण हुआ था। हरित क्रांति को आगे बढाने में रेडियो प्रसारणों ने महत्वूर्ण भूमिका निभाई थी। रेडियो के माध्यम से सामान्य जन तक पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण शिक्षा, वन्य जीव सुरक्षा एवं संरक्षण, पेड़ लगाओ अभियान कार्यक्रमों से संबंधित जानकारी आसानी से भेजी जा सकती हैं। आकाशवाणी से विविध प्रकार के प्रसारण किए जाते हैं, जिनमें सूचना, शिक्षा, मनोरंजन एवं व्यापारिक विज्ञापन आदि मुख्य है। पर्यावरण संरक्षण संबंधी राष्ट्रीय नीतियों एवं कार्यक्रमों, प्रदूषण निवारण के उपायों, कृषि और औद्योगिक विकास, सतत विकास और पर्यावरणीय जागरुकता एवं शिक्षा कार्य आदि से संबंधित संदेशों को जन–जन तक पहुंचाने में रेडियो की अपनी सशक्त भूमिका है। दूरदर्शन का भारत में 15 सितम्बर, 1959 को शैक्षणिक उद्देश्यों के साथ आरंभ हुआ। दूरदर्शन आज देष के हर कोने में अपनी पहुंच बना चका है। पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने में इसकी भूमिका काफी हद तक सहायक हो सकती है। कचरे एवं अपशिष्ट का प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण, सामाजिक वानिकी, वन्य जीवन संरक्षण, कृषि विकास, जल और भूमि के संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण के कानूनों का दूरदर्शन एवं अन्य टेलीविजन चौनलों के माध्यम से प्रसारण द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है।

पर्यावरण मुद्दे और फिल्म जगत की भूमिका

फिल्म उद्योगों का इतिहास 100 वर्षो से भी अधिक पुराना है। फिल्में जनसामान्य को शिक्षा, सूचना और मनोरंजन प्रदान करने का एक अच्छा माध्यम है। फिल्म और चलचित्र के माध्यम से पर्यावरण, पर्यावरण प्रदूषण, हमारे पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव संरक्षण आदि की जानकारी आसानी से दी जा सकती है। पर्यावरण पर डॉक्यूमेंट्री एवं फीचर फिल्में भी बनाई जाती हैं। जैसे मोगली, द टाइगर, किंग कांग, टार्जन एंड हिज मेट, डेथ इन द गार्डन, द जंगल बुक, एपोकैलिप्स नाउ, फित्जकाराल्डो आदि फिल्मों का निर्माण कर आमजन को जागरूक किया। वहीं पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण, वन्य जीव संरक्षण आदि विषयों से संबंधित अधिक से अधिक फिल्मों के निर्माण की आवश्यकता है ताकि जनसामान्य को सार्थक जानकारी एवं ज्ञान प्रदान किया जा सके।